मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

मार्च–अप्रैल
2026

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला को एक्सीलेंस अवॉर्ड

उच्च शिक्षा में प्रभावी एवं परिवर्तनकारी नेतृत्व और विवि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए दिल्ली में सम्मानित किया गया

दिल्ली में हुए कार्यक्रम में अपने पुरस्कार के साथ कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला। इसी कार्यक्रम में उनका स्वागत (ऊपर के चित्र में) करते अतिथि।

परिसर संवाददाता

मेरठ। दिल्ली में मिलेनियल इंडिया इंटरनेशनल चौंबर ऑफ कॉमर्स इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर (एमआईआईसीसीआईए) द्वारा हुए समारोह में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला को एक्सीलेंस अवार्ड–2026 से सम्मानित किया गया। समारोह में देशभर से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली शख्सियतों की उपलब्धियों की सराहना की गई।

कुलपति ने कहा– उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, नवाचार और समावेशिता को बढ़ावा देने का कार्य जारी रहेगा

प्रोफेसर शुक्ला को शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए उच्च शिक्षा क्षेत्र में उनके प्रभावी एवं परिवर्तनकारी नेतृत्व और विवि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए सम्मानित किया गया।

एमआईआईसीसीआईए ने कहा कि कुलपति के नेतृत्व में विवि ने गुणवत्ता और उत्कृष्टता क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

विश्वविद्यालय को नैक द्वारा ए प्लस–प्लस ग्रेड मिला जो उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का प्रमुख मानक है। विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ में भी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है।

क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग, टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग एवं सिमैगो इंस्टीट्यूशंस रैंकिंग में भी विवि ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि यह सम्मान केवल उनका नहीं बल्कि पूरे विश्वविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला के अनुसार उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता, नवाचार और समावेशिता को बढ़ावा देना उनकी प्राथमिकता रही है और भविष्य में भी इसी दिशा में कार्य जारी रहेगा।

एमएसयू मलेशिया के साथ नए कोर्स पर सहमति

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विवि में मैनेजमेंट एंड साइंस यूनिवर्सिटी (एमएसयू) मलेशिया के साथ उच्च स्तरीय शैक्षणिक बैठक में दोनों विवि ने भविष्य की योजनाओं पर मंथन किया। एमएसयू से वरिष्ठ प्रतिनिधि प्रो. अब्दुल अली खातिबी विवि कैंपस पहुंचे। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, रजिस्ट्रार डॉ. अनिल यादव, वित्त नियंत्रक रमेश चंद सहित सभी डीन एवं विभागाध्यक्ष शामिल रहे।

शोध एवं विकास निदेशक प्रो. बीरपाल सिंह ने सीसीएसयू की उपलब्धि को प्रस्तुत किया। प्रो. खातिबी ने एमएसयू मलेशिया की वैश्विक रैंकिंग, शोध क्षमता तथा फार्मेसी एवं मैनेजमेंट क्षेत्रों में उसकी पहचान को बताया। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आरसी गुप्ता, प्रो. जितेंद्र सिंह, प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. एनसी गौतम, प्रो. आरके सोनी, प्रो. अतवीर सिंह, रविंद्र शर्मा, आरके शर्मा सहित सभी शिक्षक मौजूद रहे।

प्रो. खातिबी ने मेडिकल कॉलेज, ललित कला विभाग, अर्थशास्त्र विभाग, सरछोटूराम इंजीनियरिंग कॉलेज का भ्रमण भी किया।

मैनेजमेंट एंड साइंस यूनिवर्सिटी मलेशिया के प्रतिनिधि प्रोफेसर अब्दुल खातिबी का स्वागत करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

डिजिटल इनोवेशन सेंटर का शुभारंभ

सक्षम शिक्षक और हाईटेक छात्रों के निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्वविद्यालय के केंद्रीय मूल्यांकन भवन में डिजिटल इनोवेशन सेंटर का उद्घाटन हो गया है। इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि यह केंद्र विश्वविद्यालय को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने के साथ–साथ भविष्य में सक्षम शिक्षक और हाईटेक विद्यार्थियों के निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि बदलते समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से डिजिटल हो रहा है। ऐसे में शिक्षकों और विद्यार्थियों का आधुनिक तकनीकों से जुड़ना बेहद आवश्यक है। यह सेंटर उन्हें नई तकनीकों, डिजिटल टूल्स और कौशलों से लैस करेगा।

कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल डिग्री देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनाना है। इस सेंटर में आधुनिक कंप्यूटर, हाईस्पीड इंटरनेट और उन्नत संसाधनों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाएगा।

भविष्य में इस सेंटर का उपयोग विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, विशेषकर असिस्टेंट प्रोफेसर जैसी परीक्षाओं के संचालन में किया जाएगा, जिससे पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित होगी। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार यादव, वित्त अधिकारी रमेश चंद्र सहित अनेक प्रोफेसर, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

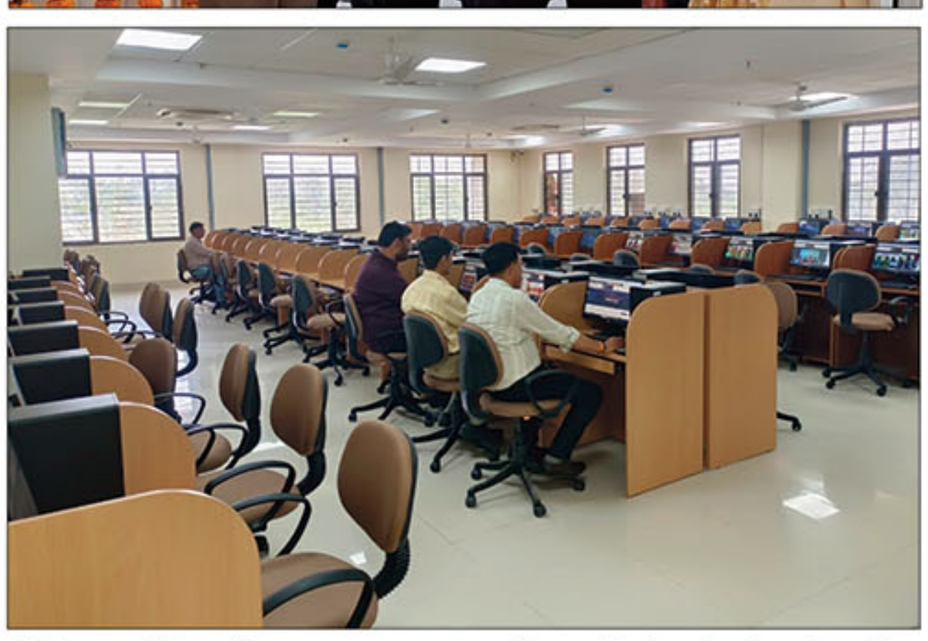

डिजिटल इनोवेशन सेंटर का उद्घाटन करतीं कुलपति (ऊपर) और सुविधासंपन्न सेंटर का एक नजारा।

छात्रों ने प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए : सर छोटू राम इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में स्टूडेंट्स कॉन्शस क्लब द्वारा आयोजित कार्यक्रम में छात्रों ने इनोवेटिट सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि प्रो. अनुज कुमार ने इनोवेशन को सामाजिक रूप से उपयोगी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

शहीदों को नमन...

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान दिवस पर 23 मार्च को भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि देतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला के निर्देशन में एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयंसेवकों ने रैली निकाली।

प्रेरणा स्रोत है अंबेडकर का संघर्ष

परिसर संवाददाता

मेरठ। 14 अप्रैल को डॉ. बीआर अंबेडकर जयंती के क्रम में इतिहास विभाग में चित्र प्रदर्शनी का आगाज हुआ। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि डॉ. अंबेडकर का जीवन संघर्ष, समर्पण और सामाजिक न्याय के प्रति उनका दृष्टिकोण आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।

रजिस्ट्रार डॉ. अनिल कुमार ने कह कि एआई के इस युग में आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर छात्रों को नवाचार की दिशा में आगे बढ़ना समय की जरुरत है।

वहीं विश्वविद्यालय की साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद एवं मनोविज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वधान में 'स्वतंत्र भारत में शैक्षिक सुधारों पर डॉ. बीआर अंबेडकर का प्रभाव' विषय पर निबंध प्रतियोगिता हुई।

शुभारंभ डॉ. ज्योति उपाध्याय, प्रो. अल्पना अग्रवाल, प्रो. आराधना, प्रो. नीलू जैन गुप्ता, प्रो. केके शर्मा, डॉ. अंशु अग्रवाल, डॉ. विजेता गौतम एवं रमिता चौधरी ने किया।

नारी शक्ति वंदन बिल पर रैली–पेंटिंग

परिसर संवाददाता

मेरठ। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के प्रति जन–जागरुकता के लिए सीसीएसयू कैंपस में एनसीसी कैडेट्स और एनएसएस स्वयंसेवकों ने रैली निकाली। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला के निर्देशन में निकली यह रैली विभिन्न मार्गों से गुजरी। इस दौरान मुख्य द्वार पर हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। विभिन्न संकायों की छात्राओं के साथ एनएसएस और कैडेट्स ने नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि आज की नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही है। नारी के बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी है। दूसरी ओर फाइन आर्ट विभाग में अरुणोदय इंटरनेशनल, विश्व नारी अभ्युदय संगठन मेरठ चैप्टर एवं ललित कला संस्थान की ओर से नारी शक्ति वंदन पर केंद्रित पेंटिंग, स्लोगन एवं पोस्टर प्रतियोगिता और जागरूकता रैली हुई। शुभारंभ डॉ. अनुभूति चौहान अध्यक्ष अरुणोदय और प्रो. अलका तिवारी ने किया।

प्रोफेसर अलका तिवारी का सम्मान

मेरठ। लोक कला के निश्शुल्क प्रशिक्षण से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली सीसीएसयू की ललित कला विभाग की समन्वयक प्रो. अलका तिवारी को लखनऊ में सम्मानित किया गया।

राज्य ललित कला अकादमी की ओर से प्रो. तिवारी को प्रशस्ति पत्र, पटका एवं नकद धनराशि प्रदान की गई।

यह सम्मान उन्हें दृश्य कला के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान, समर्पण एवं उत्कृष्ट कला साधना के लिए प्रदान किया गया। प्रदर्शनी में उनकी फड़ कला शैली पर आधारित कृति विशेष आकर्षण का केंद्र रही।

स्नातक के हर छात्र को पढ़ना होगा एआई

परिसर संवाददाता

मेरठ। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की बढ़ती उपयोगिता और भविष्य की मांग को देखते हुए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है। इस सत्र से बीए, बीएससी और बीकॉम (एनईपी पाठ्यक्रम) में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए एआई फॉर ऑल कोर्स अनिवार्य कर दिया गया है। यूजीसी के निर्देशों पर आधारित यह पहल कानपुर विश्वविद्यालय के बाद अब सीसीएसयू में भी लागू हो गई है जिससे यह प्रदेश के उन प्रमुख विश्वविद्यालयों में शामिल हो गया है जहां एआई की बुनियादी शिक्षा दी जाएगी।

विश्वविद्यालय ने इस कोर्स को तकनीकी के साथ–साथ सुगम बनाने के लिए पूर्णतः ऑनलाइन मोड में रखने का निर्णय लिया है। यह 75 घंटे का बेसिक थ्योरी और प्रैक्टिकल कोर्स होगा, जिसके लिए 3 क्रेडिट निर्धारित किए गए हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को दूसरे सेमेस्टर में पढ़ाया जाएगा। कुल 100 अंकों के इस कोर्स में 40 अंक निरंतर आंतरिक मूल्यांकन के होंगे, जबकि 60 अंक विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षा के होंगे। अंकों के आधार पर स्नातक नियमों के अनुसार ग्रेड दिए जाएंगे। चयनित कंपनी छात्रों को ऑनलाइन कंटेंट और प्रश्न बैंक उपलब्ध कराएगी। इस कोर्स का उद्देश्य केवल इंजीनियरिंग ही नहीं, बल्कि कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन और शिक्षा जैसे सभी संकायों के छात्रों को एआई साक्षर बनाना है।

विश्वविद्यालय का मानना है कि इस पहल से छात्रों में डिजिटल साक्षरता बढ़ेगी और वे आधुनिक रोजगार के बाजार के लिए तैयार हो सकेंगे। सीसीएसयू के कुलसचिव अनिल कुमार यादव के मुताबिक यह कदम छात्रों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में मदद करेगा। कैंपस और सभी संबद्ध कॉलेजों में यह कोर्स समान रूप से लागू होगा। यूजी के बाद इसे पीजी स्तर सहित सभी विषयों में विस्तारित करने की भी योजना है।

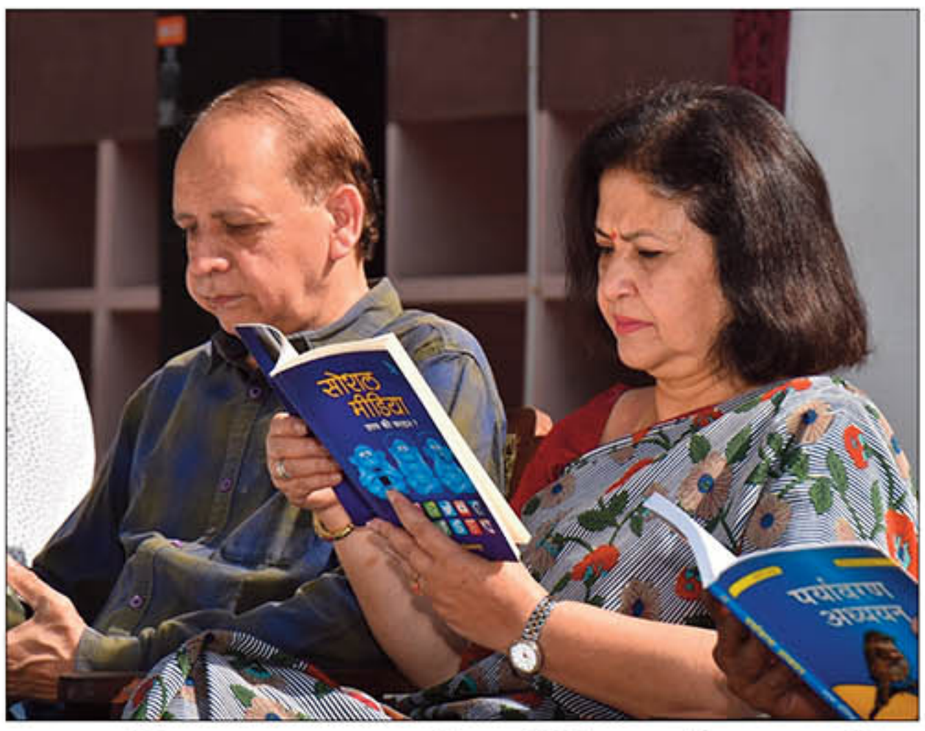

वास्तविक ज्ञान और चिंतनशील दृष्टि केवल पुस्तकों से ही विकसित होती है

मेरठ। सीसीएसयू की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिषद तथा राजा महेंद्र प्रताप पुस्तकालय ने 'नारी शक्ति वंदन श्रृंखला' के अंतर्गत 'पढ़े विश्वविद्यालय, बढ़े विश्वविद्यालय' कार्यक्रम किया। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने इसका शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि डिजिटल माध्यमों से त्वरित सूचना मिलती है। वास्तविक ज्ञान और चिंतनशील दृष्टि केवल पुस्तकों से ही विकसित होती है। पुस्तकें व्यक्तित्व, मूल्यबोध और आलोचनात्मक सोच को परिपक्व बनाती हैं। कुलपति ने छात्रों से डिजिटल साधनों के साथ पुस्तकों से भी जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम संयोजक प्रो. जमाल अहमद सिद्दीकी ने पुस्तकों का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि एआई और चैटजीपीटी जैसी तकनीक ज्ञान अर्जन के तरीके बदल रही हैं।

इतिहास विभाग में लगी चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि।

संविधान में महिलाओं की भूमिका पर प्रदर्शनी

परिसर संवाददाता

मेरठ। साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद एवं इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में नारी वंदन कार्यक्रम के अंतर्गत संविधान निर्माण में महिलाओं की भागीदारी विषय पर इतिहास विभाग स्थित स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय में चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि मेरठ बार एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष अनुज शर्मा एडवोकेट, वरिष्ठ अधिवक्ता मदनपाल शर्मा, इतिहास विभागाध्यक्ष एवं परिषद समन्वयक प्रोफेसर कृष्णकांत शर्मा, प्रोफेसर विघ्नेश कुमार, प्रोफेसर आराधना एवं प्रोफेसर ए.वी. कौर द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अनुज शर्मा ने कहा कि प्राचीन काल से ही समाज और संस्कृति के निर्माण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी महिला का योगदान अत्यंत अहम होता है, चाहे वह माता, बहन या अन्य किसी रूप में हो।

प्रोफेसर कृष्णकांत शर्मा ने इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों को प्रेरणादायक बताया, जबकि प्रोफेसर विघ्नेश कुमार ने भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यत्र पूज्यन्ते नारी, रमन्ते तत्र देवता का उल्लेख किया। कार्यक्रम में आराधना, ए.वी. कौर, डॉ. कुलदीप कुमार त्यागी, डॉ. योगेश कुमार, डॉ. मनीषा, डॉ. शालिनी, प्रज्ञा, आदेश शर्मा एडवोकेट, राकेश शर्मा सहित अनेक शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक :** डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **संपादक :** लव कुमार सिंह, **संपादकीय सलाहकार :** डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादकीय टीम :** बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

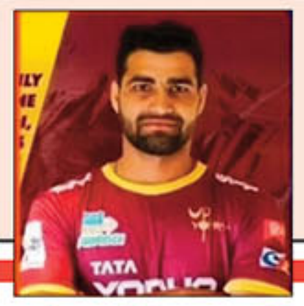

भानु प्रताप का भारतीय कबड्डी टीम में चयन : विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के पूर्व छात्र भानु प्रताप तोमर का चयन भारतीय कबड्डी टीम 6 एशियाई बीच गेम में हुआ है। इससे पहले भानु राष्ट्रीय कबड्डी, प्रो- कबड्डी में यूपी वारियर, खेलो इंडिया जैसे अनेक खेलों में भाग ले चुके हैं।

विद्यालय से विश्वविद्यालय : बढ़ा आत्मविश्वास, मिला नया अनुभव

अनुष्का दीक्षित

जब मैंने पहली बार चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, तब मेरे मन में उत्साह के साथ थोड़ी सी घबराहट भी थी। विद्यालय के बाद विश्वविद्यालय की दुनिया मेरे लिए बिल्कुल नई थी। नई जगह, नए लोग और नया वातावरण देखकर शुरुआत में सब कुछ अलग लगा, लेकिन धीरे–धीरे मुझे यहाँ का माहौल अच्छा लगने लगा।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय का परिसर बहुत बड़ा और सुंदर है। यहाँ कई अलग–अलग विभाग हैं, जहाँ विभिन्न विषयों की पढ़ाई होती है। दूर–दूर से बहुत से छात्र यहाँ पढ़ने आते हैं, जिससे यहाँ का वातावरण और भी जीवंत लगता है। विश्वविद्यालय में एक बड़ा पुस्तकालय भी है, जहाँ छात्र शांति से बैठकर अध्ययन कर सकते हैं। चारों ओर हरियाली होने के कारण यहाँ का माहौल बहुत सुखद लगता है। छात्रों के रहने के लिए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है।

मैंने यहाँ बीएजेएमसी पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है और मेरी कक्षाएँ तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल में होती हैं। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की स्थापना वर्ष 2001 में हुई थी। शुरुआत में यहाँ पोस्ट–ग्रेजुएट कोर्स से पढ़ाई शुरू की गई थी। वर्तमान में बीएजेएमसी तीन वर्षीय (6 सेमेस्टर) का पाठ्यक्रम है, साथ ही नई शिक्षा नीति के अंतर्गत चार वर्षीय ऑनर्स प्रोग्राम भी संचालित है।

पाठ्यक्रम की खास बात यह है कि इसमें पढ़ाई के साथ प्रायोगिक ज्ञान पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। समय–समय पर कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, जिनसे नई चीजें सीखने का अवसर मिलता है। विभाग द्वारा एक प्रायोगिक समाचार पत्र 'परिसर' भी प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे वास्तविक पत्रकारिता का अनुभव मिलता है।

विभाग में रेडियो स्टूडियो जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं, जहाँ हम समाचार वाचन और रेडियो पर बोलना सीखते हैं। इससे हमें पत्रकारिता के क्षेत्र को समझने में बहुत मदद मिलती है। यहाँ आकर मेरी मुलाकात कई छात्रों से हुई। उनसे बातचीत करने पर उन्होंने भी यहाँ की पढ़ाई और अच्छे वातावरण की काफी प्रशंसा की।

मेरे लिए विश्वविद्यालय में आना एक नया और यादगार अनुभव रहा है। यहाँ आकर मुझे न केवल पढ़ाई में मदद मिली, बल्कि नए लोगों से मिलने और जीवन के कई नए अनुभव सीखने का अवसर भी मिला।

अब मैं पहले से अधिक आत्मविश्वास महसूस करती हूँ और अपने विचारों को बेहतर तरीके से व्यक्त करना सीख रही हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ से सीखी हुई बातें मेरे भविष्य में अवश्य काम आएँगी।

रैपिड रेल

यात्रियों ने कहा– तेज, आरामदायक और समय की बचत

वन्दना

मेरठ। नमो भारत रैपिड रेल (रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम–आरआरटीएस) परियोजना मेरठ में परवान चढ़ चुकी है।

स्थानीय लोगों से बातचीत करने पर पता चलता है कि यह परियोजना दिल्ली और मेरठ के बीच यात्रा को तेज, सुरक्षित और अधिक सुविधाजनक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है।

22 फरवरी 2026 को परियोजना के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में कहा था कि देश में आधुनिक परिवहन प्रणाली का विकास "नए भारत की पहचान" है और इससे न केवल शहरों के बीच दूरी कम होगी, बल्कि आर्थिक विकास को भी गति मिलेगी। उन्होंने आरआरटीएस को "भविष्य का परिवहन" बताते हुए इसे आम जनता के लिए लाभकारी बताया।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (छब्त्ज्) द्वारा विकसित इस कॉरिडोर की कुल लंबाई लगभग 82 किलोमीटर है। इसके पूरा होने के बाद दिल्ली से मेरठ की दूरी करीब 55 मिनट में तय हो जा

रही है।

22 फरवरी से पहले तक मेरठ साउथ से दिल्ली के न्यू अशोक नगर तक नमो भारत 55 किलोमीटर की दूरी तय कर रही थी। इससे प्रतिदिन करीब 60 हजार यात्री सफर कर रहे थे। अब हर दिन औसतन एक लाख से अधिक लोग सफर कर रहे हैं।

मेरठ के छात्र आर्यन ने बताया, "रोजाना दिल्ली आने–जाने में हमारा काफी समय बच रहा है। इससे पहले बस या ट्रेन से सफर काफी लंबा और थकाऊ होता था।"

वहीं एक नौकरीपेशा यात्री ने कहा, "रैपिड मेट्रो का इंटीरियर और स्पीड दोनों ही सामान्य मेट्रो से बेहतर लगते हैं। इसमें सफर ज्यादा आरामदायक महसूस होता है।"

एक अन्य महिला यात्री के अनुसार, "अगर किराया संतुलित रहता है, तो यह हमारे लिए सबसे सुविधाजनक विकल्प बन सकता है।"

यहां बताते चलें कि मेरठ में रैपिड रेल और मेरठ मेट्रो, दोनों एक साथ शुरू हुई हैं। मेरठ मेट्रो की सेवा अभी मोदीपुरम से परतापुर स्टेशन तक ही है, जबकि रैपिड रेल मोदीपुरम से दिल्ली में सराय काले खां तक जा रही है। रैपिड रेल की अधिकतम गति लगभग 160 किमी/घंटा है, जो मेट्रो ट्रेन से ज्यादा है।

नमो भारत का सफर– एक नजर

- 2010– एनसीआरपीबी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना बोर्ड) ने हाई–स्पीड रेल और RRTS की नींव रखी।
- 12 सितंबर 2018– दिल्ली के साकेत में एनसीआरटीसी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम) का कार्यालय खुला।
- 8 मार्च 2019– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गाजियाबाद में रैपिड रेल निर्माण का शिलान्यास किया।
- 12 अप्रैल 2019– मेरठ में मिट्टी की जांच शुरू।
- 20 जून 2019– गाजियाबाद में सिविल कार्य शुरू लेकिन कोविड की बाधा
- 1 जुलाई 2020– मेरठ सीमा में पिलर निर्माण कार्य शुरू।
- 30 जुलाई 2021– मेरठ में रैपिड रेल निर्माण कार्य शुरू।
- 20 अक्टूबर 2023– प्रधानमंत्री ने साहिबाबाद और दुहाई डिपो के बीच 17 किमी के पहले चरण का शुभारंभ किया।
- 18 अगस्त 2024– रैपिड रेल मेरठ साउथ तक विस्तारित हुई।
- 5 जनवरी 2025– नमो भारत रैपिड रेल मेरठ साउथ (परतापुर तिराहा) से दिल्ली में आनंद विहार, न्यू अशोक नगर तक पहुंची।
- 22 फरवरी 2026 को प्रधानमंत्री ने नमो भारत के बचे हिस्से (मेरठ साउथ से मोदीपुरम व न्यू अशोक नगर से सराय काले खां तक के लिए) और मेरठ मेट्रो का शुभारंभ किया।

नमो भारत का सबसे गहरा स्टेशन है बेगमपुल

बेगमपुल स्थित नमो भारत स्टेशन, दिल्ली–मेरठ रैपिड रेल कॉरिडोर का सबसे गहरा और मुख्य भूमिगत स्टेशन है। यह स्टेशन लगभग 22–23 मीटर गहरा, 270 मीटर लंबा और 24.5 मीटर चौड़ा है, जो शहर के व्यापारिक केंद्र में स्थित है।

सीसीएसयू की धरोहर के समान है इतिहास विभाग

शौर्य रे

मेरठ। इतिहास विभाग चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के सबसे प्रमुख विभागों में से एक है।

1977–78 में स्थापित इस विभाग में वर्तमान में एम.ए. (इतिहास) और पीएच.डी. जैसे पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों में लगभग 300 से अधिक छात्र–छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं। यहां अनुभवी और योग्य प्राध्यापकों की टीम प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास की शिक्षा प्रदान करती है।

विभाग में कुल 6 से अधिक शिक्षक कार्यरत हैं, जो शिक्षण के साथ–साथ शोध गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यहां छात्रों के लिए समृद्ध पुस्तकालय, संदर्भ पुस्तकें, शोध सामग्री और शांत अध्ययन वातावरण जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। विभाग की उपलब्धियों में कई छात्रों का यूजीसी–नेट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन भी शामिल है।

विभाग के छात्र अंतिम मलिक ने बताया, "इतिहास विभाग में पढ़ाई का माहौल बहुत अच्छा है। शिक्षक हमें केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखते, बल्कि इतिहास को समझने और उस पर चर्चा करने के लिए भी प्रेरित करते हैं।"

छात्रा अर्चिता शर्मा कहती हैं, "विभाग में उपलब्ध पुस्तकें और शिक्षकों का मार्गदर्शन हमारी पढ़ाई को और बेहतर बनाता है।"

विभाग में समय–समय पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं, जिनमें देश–विदेश के विद्वान इतिहास से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार साझा करते हैं। विभाग द्वारा कई कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

"हमारा प्रयास है कि छात्रों को इतिहास की गहरी समझ दी जाए और उन्हें शोध व अकादमिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। विभाग लगातार शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को बेहतर अवसर प्रदान कर रहा है।"

प्रोफेसर कृष्णकांत शर्मा, विभागाध्यक्ष

विभाग में है दर्शनीय संग्रहालय

विभाग की एक विशेष उपलब्धि इसका संग्रहालय है, जहाँ विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ और वस्तुएँ प्रदर्शित की गई हैं। संग्रहालय में हड़प्पा सभ्यता, हल्दीघाटी से संबंधित ऐतिहासिक सामग्री, विभिन्न कालों की ईंटों के नमूने तथा 1857 की क्रांति से जुड़ी जानकारी देखने को मिलती है। अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र भी इस संग्रहालय को देखने के लिए आते हैं।

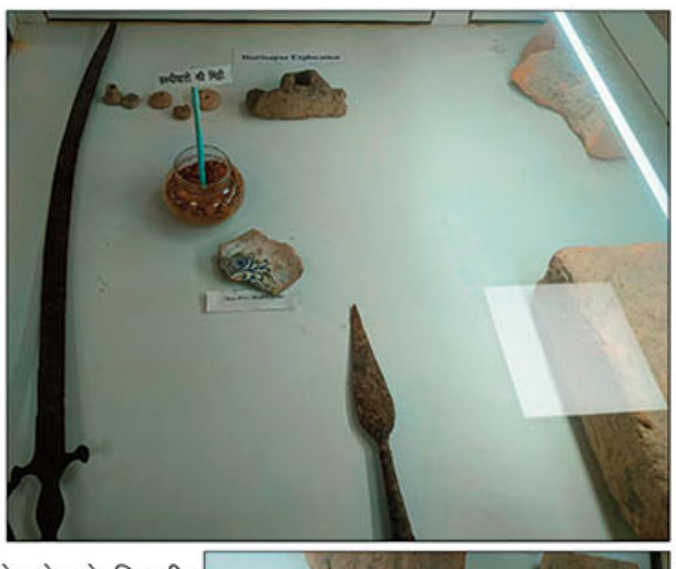

डॉ. भीमराव अंबेडकर को नमन किया : डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में परिसर स्थित अंडेबकर हॉस्टल में छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने कार्यक्रम आयोजित कर संविधान निर्माता को स्मरण किया और उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा ली।

औघड़नाथ मंदिर : अध्यात्म, संस्कृति और इतिहास का मिलन स्थल

नव्या श्रीवास्तव

औघड़नाथ मंदिर मेरठ शहर के कैंट इलाके में स्थित एक बहुत ही प्रसिद्ध और पवित्र शिव मंदिर है।

लोग इसे 'काली पलटन मंदिर' भी कहते हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यहां 'औघड़नाथ बाबा' के रूप में उनकी पूजा की जाती है। यह मंदिर सिद्ध क्षेत्र कहलाता है। यह मान्यता है, कि इस मंदिर में शिवलिंग स्वयंभू है। यानि यह शिवलिंग स्वयं पृथ्वी से बाहर निकला है। तभी यह तत्काल फलदाता है।

रोजाना यहां बहुत सारे श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं, लेकिन सावन और महाशिवरात्रि के समय यहां खासतौर पर बहुत ज्यादा भीड़ होती है। मंदिर का माहौल बहुत शांत और सुकून देने वाला होता है, जहां आकर लोगों को मन की शांति मिलती है।

इस मंदिर की स्थापना का कोई निश्चित समय ज्ञात नहीं है, लेकिन जनश्रुति के अनुसार यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से भी पहले से शहर और आसपास के लोगों के बीच श्रद्धास्थल के रूप में उपस्थित था। वीर मराठाओं के इतिहास में अनेकों पेशवाओं की विजय यात्राओं का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने यहाँ भगवान शंकर की पूजा अर्चना की थी।

1857 की क्रांति के समय, जब भारत में अंग्रेजों के खिलाफ पहली बड़ी लड़ाई हुई थी, तब इस मंदिर की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। ऐसा माना जाता है कि इसी जगह पर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की योजना बनाई गई थी। चूंकि यह मंदिर सेना की छावनी (पलटन) के पास था, इसलिए इसे 'काली पलटन मंदिर' भी कहा जाने लगा। मंदिर में शहीदों की याद में स्मारक भी बना हुआ है, जो हमें उस समय की याद दिलाता है।

1944 तक सेना के प्रशिक्षण केन्द्र से सटा यह एक छोटा सा शिव मंदिर था और इसके पास एक कुंआ मौजूद था। बाद में इसका विस्तार हुआ। इस मंदिर के निर्माताओं में राय बहादुर गूजरमल मोदी का नाम भी शामिल है। 2 अक्टूबर 1968 को ब्रह्मलीन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य कृष्णबोधाश्रम जी महाराज ने नवीन मंदिर का शिलान्यास किया था।

मंदिर सफेद संगमरमर से निर्मित है, जिस पर उत्कृष्ट नक्काशी भी की गई है। बीच में मुख्य मंदिर बाबा भोलेनाथ एवं माँ पार्वती को समर्पित है, जिसका शिखर अत्यंत ऊँचा है। उस शिखर के ऊपर कलश स्थापित है। मंदिर के गर्भ गृह में भगवान एवं भगवती की सौम्य आदमकद मूर्तियाँ स्थापित हैं व बीच में नीचे शिव परिवार सिद्ध शिवलिंग के साथ विद्यमान है। इसके उत्तरी द्वार के बाहर ही इनके वाहन नंदी बैल की एक विशाल मूर्ति स्थापित है। गर्भ गृह के भीतर मंडप एवं छत पर भी काँच का अत्यंत ही सुंदर

काम किया हुआ है।

इस मंदिर के उत्तरी ओर दूसरा मंदिर राधा–कृष्ण को समर्पित है, जिसका शिखर भी मुख्य मंदिर के समान ही ऊँचा है। इस मंदिर की परिक्रमा में कई सुंदर चित्र बने हुए हैं। गर्भ गृह में राधा कृष्ण की बहुत ही आकर्षक एवं भव्य मूर्तियाँ एक सुंदर रजत मंडप में स्थापित हैं। गर्भ–गृह के बाहर एक बड़ा मण्डप निर्मित है। मंदिर में अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियां भी शोभायमान हैं।

मुख्य मंदिर के दक्षिण में सत्संग भवन बना हुआ है, जहां भजन–कीर्तन और धार्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं।

यह मंदिर रोज सुबह से रात तक खुला रहता है, इसलिए लोग अपनी सुविधा के अनुसार कभी भी दर्शन करने आ सकते हैं।

सावन के महीने में यह मंदिर कांवड़ियों की श्रद्धा का केन्द्र बन जाता है। इस दौरान करीब पांच लाख कांवड़िये मंदिर पहुँच कर बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक करते हैं और स्वयं को धन्य मानते हैं। अन्य शिवभक्तों को मिलाकर यह संख्या 25 लाख तक पहुंच जाती है।

कुल मिलाकर, औघड़नाथ मंदिर एक ऐसी जगह है जहां अध्यात्म, संस्कृति और इतिहास तीनों का सुंदर मेल देखने को मिलता है। यहां आकर न सिर्फ भगवान के दर्शन होते हैं, बल्कि हमें अपने देश के इतिहास और बलिदानियों का भी स्मरण हो आता है।

तपोवन

कैंपस के बीच जंगल में मंगल

कनिका सागर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के परिसर में बना 'तपोवन' एक ऐसी जगह है, जहाँ

कदम रखते ही शहर का शोर और प्रदूषण खत्म हो जाता है। अगर आप प्रकृति प्रेमी हैं, तो यह जगह आपके लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है।

तपोवन का निर्माण 2016–2017 के दौरान किया गया था। इसे विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति के मार्गदर्शन में बनाया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों और सैर करने वालों को तनाव से दूर एक शांत और आध्यात्मिक माहौल देना था। इसे पुराने जमाने के 'ऋषि आश्रम' की तर्ज पर डिजाइन किया गया है।

तपोवन का फैलाव लगभग 10 से 12 एकड़ की जमीन पर है। यह पूरा हिस्सा घने पेड़ों और झाड़ियों से ढका हुआ है, जो इसे यूनिवर्सिटी के बाकी हिस्सों से काफी ठंडा और हरा–भरा बनाए रखता है। तपोवन में जाने के लिए सुबह के समय छह से आठ बजे तक और शाम को चार से सात बजे तक का समय तय किया गया है। यहां छात्रों के अतिरिक्त शहर से भी अनेक लोग सुबह–शाम भ्रमण करने के लिए आते हैं।

तपोवन में सैकड़ों प्रकार के पेड़–पौधे मौजूद हैं, जो पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। इनमें नीम, तुलसी, अर्जुन और गिलोय जैसे कई औषधीय पौधे भी हैं। पीपल, बरगद, शीशम और सागौन के बड़े–बड़े पेड़ भी यहां मौजूद हैं। इसके अलावा जामुन, अमरूद और बेल–पत्र के पेड़ों के साथ–साथ रंग–बिरंगे फूलों की क्यारियाँ भी यहाँ की सुंदरता बढ़ाती हैं।

तपोवन में हमें कई तरह के पक्षी और जानवर देखने को मिलते हैं। यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण मोर हैं, जो अक्सर घूमते हुए दिख जाते हैं। इसके अलावा कोयल, तोते और कठफोड़वा की आवा. जें यहाँ गूंजती रहती हैं। यहाँ गिलहरियाँ और खरगोश आम तौर पर दिख जाते हैं। कभी–कभी पास के जंगलों से नीलगाय भी यहाँ आ जाती हैं।

कुल मिलाकर तपोवन न केवल मानसिक शांति प्रदान करता है बल्कि लोगों को शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रखने में सहायक है। छात्र और शहर के नागरिक, सभी इसकी प्रशंसा करते हैं।

कैंपस में आधुनिक सुविधाओं से लैस नेक्स्ट जेन पोस्ट ऑफिस शुरू

सचिन कुमार

परिसर स्थित उप डाकघर को अब नेक्स्ट जेन (एन–जेन) सुविधाओं से सुसज्जित कर दिया

गया है। आधुनिक सुविधाओं से लैस इस डाकघर का उद्देश्य युवाओं, खासकर जेन–जी को डाक सेवाओं से जोड़ना है। इससे पहले देश का पहला नेक्स्ट जेन पोस्ट ऑफिस आईआईटी दिल्ली कैंपस में विकसित किया गया था, उसी तर्ज पर अब मेरठ में भी यह पहल की गई है।

आठ अप्रैल को डाक विभाग के महानिदेशक (डाक सेवाएं) जितेंद्र गुप्ता ने फीता काटकर इसका उद्घाटन किया। इस मौके पर कुलपति डॉ. संगीता शुक्ला, पोस्टमास्टर जनरल अतुल कुमार श्रीवास्तव और चीफ पोस्टमास्टर जनरल प्रणव कुमार भी उप. स्थित रहे।

डाकघर को युवाओं के अनुकूल बनाने के लिए यहां कई नई सुविधाएं शुरू की गई हैं। आने वाले लोगों को फ्री वाई–फाई, कॉफी मशीन और मैगजीन कॉर्नर जैसी सुविधाएं मिलेंगी। साथ ही पूरे परिसर को मॉडर्न लुक दिया गया है, ताकि युवा यहां सहज महसूस करें और अधिक संख्या में डाक सेवाओं का उपयोग करें।

डाकघर की दीवारों को आकर्षक बनाने के लिए मेरठ की सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक धरो. हरों पर आधारित पेंटिंग्स भी बनाई गई हैं। ये पेंटिंग्स विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के छात्रों द्वारा तैयार की गई हैं, जो इस स्थान को और भी खास बनाती हैं।